—उत्तरार्द्ध

योगी का आत्मचरित्र

(प्रवचन तिथि : १६-१२-१८७२ से १६-४-१८७३)

पृष्ठ संख्या ६ से २४३

परिशिष्ट

परिशिष्ट—१

अज्ञात जीवनी के भारतीय स्थानों के पते

भारत के एक-एक स्थान, एक-एक तीर्थ-गुफा-नदी-नाले के जहाँ-जहाँ अवधूत दयानन्द ने भ्रमण किया था उनमें से बहुत-से स्थानों को लापता बताकर प्रतिवाद कर दिया गया था उनमें से पाँच-छह स्थानों और तीर्थों के चित्र भी दिये हैं। अधिक देने से संख्या बढ़ जाती है।

नर्मदा के तट के तीर्थ

अमर कण्टक—विन्ध्य प्रदेश की सरकार का ग्रीष्म का आवास-स्थान माना गया है। अतः वहां तक रीवा से पक्की सड़क है। मोटर बसें चलती हैं। पूर्वी रेलवे की कटनी-बिलासपुर शाखा में बिलासपुर से ६३ मील पर 'पेडरा रोड' स्टेशन है। पास ही 'गौरेला' ग्राम है। कई धर्मशालायें हैं। गौरेला से मोटर कबीर चौतरा जाती है। वहां से अमरकण्टक तीन मील है। अहिल्या बाई की धर्मशाला में ठहरिये।

११ कोण का एक पक्का कुण्ड है। चारों ओर सीढियां है। पश्चिम में गोमुख है उस से थोड़ा २ जल गिरता है। इस कुण्ड को **कोटि तीर्थ** कहते हैं। आधा मील दूरी पर आग्नेय कोण में मार्कण्डेय ऋषिका आश्रम है।

भृगु कमण्डलु—मार्कण्डेय से १ मील **शोणभद्र** नदो का उद्‌गम है। घोर जंगल का कठिन मार्ग। दक्षिण में भृगु कमण्डलु है। एक छोटी नदी निकलती है। भृगु ने तपस्या की।

कबीर चौतरा—अमर कण्टक से ३ मील वन के मध्य है। कबीर जी का निवास रहा। वन्य पशुओं का भय है।

कपिल आश्रम—अमर कण्टक से ७ मील पर है। यहां **कपिल धारा** नामक नर्मदा का प्रपात है। बहुत संकरा पैदल मार्ग हैं। पास में ही **नील गंगा** का संगम और चक्रतीर्थ हैं।

दुग्ध धारा— १ मील आगे दूसरा प्रपात दुग्धधारा है। मार्ग संकरा और डरावना है।

ज्वालेश्वर—अमर कण्टक से उत्तर में ४ मील पर ज्वाला नदी का उद्गम है। ज्वालेश्वर महादेव का मन्दिर है। सघन वन एवं पर्वत का मार्ग है। मार्गदर्शक लेकर ही जाना है।

ऋण मुक्तेश्वर मन्दिर— डिंडोरी से ९ मील सड़क पर है। मचरार नदी के किनारे स्वामी शंकराचार्य ने स्थापित किया था। नर्मदा यहाँ से ६ मील है।

कुकरी मठ— ऋण मुक्तेश्वर कुकरी मठ में ही है।

व्यास आश्रम–गोंदिया-जबलपुर पूर्व रेलवे लाइन पर 'नैनपुर' स्टेशन है। वहाँ से दूसरी लाइन मंडला फोर्ट जाती है। वहाँ से देव गाँव तक पक्की सड़क है। वहाँ **बढनेर** नदी नर्मदा में मिलती है।

मण्डला किले के सामने नर्मदा के दूसरे तटपर व्यास-आश्रम है। व्यासनारायण शंकर की मूर्ति है।

देव कुण्ड— डिंडोरी से मण्डला जाने वाली सड़क पर १४ मील पर सक्का ग्राम है। दो मील पर **खरमेर** नदी नर्मदा में मिलती है। पास देव नाले का कुण्ड है। इस देवकुण्ड में ४० फुट ऊपर से जल गिरता है। यहाँ कई गुफाएं हैं।

महो गांव— मण्डला से आने वाली पक्की सड़क पर ९ मील दूर **महोगांव** है। जमदग्नि की कामधेनु यहीं रहती थी। **बढनेर नदी** के किनारे यह गाँव है।

हृदय नगर— मण्डला के सामने नर्मदा के दूसरे तट पर बंजर नदी नर्मदा में मिलती है। संगम से ५ मील दूर हृदय नगर है। यहाँ **सुरपन** और **मटियारी** नामक नदियां बंजर नदी में मिलती हैं। यह त्रिवेणी कहलाती है। इसे पहले विष्णुपुरी कहते थे। अनेक मन्दिर और पक्के घाट हैं।

मधुपुरा घाट—या **घोड़ा घाट**:—संगम से ८ मील दूर नर्मदा के ऊपर की ओर स्थित है। यहाँ मार्कण्डेय ऋषि का आश्रम है। ऋषि मार्कण्डेय ने यहाँ तप किया था। मार्कण्डेयेश्वर का मन्दिर यहाँ है भगवान् राम के अश्वमेध का घोड़ा यहाँ आया था। इसलिए घोड़ाघाट नाम पड़ा।

योगिनी गुफा— मधु पुरा से ३ मील पूर्व की ओर है। योगिनी ने उसे गुप्त कर दिया। शत्रुघ्न के आग्रह पर लौटा दिया।

नन्दिकेश्वर घाट— जबलपुर जिले में नर्मदा के उत्तर तट पर है। लुकेश्वर से २० मील है। मण्डला-जबलपुर सड़क से नर्मदा तट के ग्राम पदमीघाट तक जा सकते है। वहाँ से ५ मील लुकेश्वर है। यहाँ थोड़ी दूर पर **हिंगना** नदी नर्मदा में मिलती है।

सिंघर पुर—देवगाँव से थोड़ी दूर उत्तर तट पर 'लिंगाघाट' ग्राम है। वहाँ से थोड़ी दूर दक्षिण तट पर सिंघरपुर ग्राम है। शृंगी ऋषि का स्थान है।

जबल पुर—मध्य रेलवे का प्रसिद्ध स्टेशन है। यहां जाबालि ऋषि का आश्रम था। इस का पुराना नाम जाबालि पत्तन है। अब यहाँ आश्रम का कोई चिह्न नहीं है।

तिलवाराघाट—जबलपुर से ६ मील दूर नागपुर जाने वाली सड़क पर है। तिलभाण्डेश्वर का मन्दिर है।

राम नगर—तिलवारा घाट से एक मील दूर नर्मदा के उत्तर तट पर **मुकुट क्षेत्र** है।

त्रिशूल घाट—रामनगर से लगभग दो मील पर नर्मदा के दोनों तटों पर क्रमशः त्रिशूल घाट तथा **त्रिशूल तीर्थ** हैं।

लमेटी घाट—त्रिशूलघाट से एक मील आगे दोनों तटों पर यह घाट है। उत्तर तट पर **सरस्वती** नदी का संगम है। इन्द्र ने यहाँ तपस्या की इन्द्रेश्वर शिवमन्दिर है।

गोपालपुर घाट— लमेटी घाट से १ मील आगे नर्मदा के उत्तर तट पर है। तीन मील पर तेवर ग्राम है। त्रिपुरी कहलाता था। दो मील पर करनबेल के खण्डहर हैं।

भेडा घाट— गोपालपुर घाट से ३ मील पर है। जबलपुर से १० मील स्टेशन भी है। पक्की सड़क है। भृगु ऋषि की तपोभूमि है। भृगु आश्रम है। वामन गंगा का संगम है। छोटी पहाड़ी पर गौरी शंकर मन्दिर है। ४० फुट ऊपर संगमरमर की चट्टानों पर प्रपात गिरता है।

जलेरी घाट—भेडा घाट से १० मील दूर यह घाट है। नर्मदा के बीच में पर्वत को तली फोड़ कर शंकर जी की जलहरी बनी है। यह कुण्ड बन गया है।

बेलपठार घाट— जलेरी घाट से ४ मील दूर नर्मदा के उत्तर तट पर है।

ब्रह्माण्ड घाट— मध्य रेलवे में जबलपुर से इटारसी की ओर ६२ मील पर करेली स्टेशन है। करेली सेसागर जाने वाली सड़क पर,करेली से ६ मील दूर, नर्मदा तट पर ब्रह्माण्ड घाट है। थोड़ी दूर पर दो धारायें हो गई हैं। द्वीप में कुछ आगे **सप्तधारा तीर्थ** है। गिरते समय कई धारायें हो गई हैं। ब्रह्मा जी का यज्ञकुंड है। यज्ञ भस्म निकलती है। उत्तर तट पर ब्रह्माण्ड ग्राम में पक्के घाट हैं।

पिठेरा गरारु— प्रवाह के ऊपर की ओर ब्रह्माण्ड घाट से लगभग १४ मील पर दक्षिण तट पर गरारु ग्राम है। सामने तट पर पिठेरा ग्राम है। प्राचीन मन्दिर अनेक हैं।

पिपरिया घाट—गरारू से ४ मील दूर नर्मदा के दक्षिण तट पर है। शंकर की मूर्ति ५ फुट से भी ऊँची है।

हरणी संगम—पिपरिया घाट से ६ मील दूर नर्मदा के उत्तर तट पर **हरणीनदी का संगम** है। यहाँ संगमेश्वर और हरणेश्वर मन्दिर हैं। सामने सांकल ग्राम है। आद्य शंकर भी यहाँ आये थे।

बुधघाट—यहाँ से २ मील बुध ग्रह की तपोभूमि है। बुधेश्वर मन्दिर है।

ब्रह्मकुण्ड—यहाँ से २ मील दक्षिण तट पर ब्रह्मकुण्ड है। कुण्ड में देव शिला है।

सहस्त्रावर्त तीर्थ—यहाँ से ५ मील दूर उत्तर तट पर स्थित है। अब इसका नाम सुनाचार घाट है।

सौगंधिक तीर्थ—यह १ मील पर है। आजकल सरीघाट कहलाता है।

सप्तर्षि वन—सहस्त्रावर्त्त तीर्थ से एक मील पर है। यह प्राचीन ब्रह्मोदतीर्थ है।

अंडिया घाट—प्रवाह की ओर ब्रह्मकुण्ड से ५ मील दूर उत्तर तट पर है। मन्मथेश्वर शिव मन्दिर है।

शांकरी गंगा संगम—अंडिया घाट से ५ मील दूर उत्तर तट पर बेलथारी ग्राम है। यहां बलि की यज्ञ वेदी है। यज्ञ भस्म निकलती है।

दक्षिण तट पर **शांकरी गंगा** नदी का संगम है। यहाँ पर आद्य शंकराचार्य आये थे।

कश्यप आश्रम— बेलथारी ग्राम से १६ मील दूर उत्तर तट पर स्थित है। गाडर बाडा स्टेशन से रिछावर घाट तक सड़क है। रिछावर घाट से शुक्लघाट १ मील है। यहाँ ऋषियात्रा काल में कश्यप आश्रम था। अब समाप्त हो गया है।

शक्कर नदी का संगम—शुक्लघाट से आगे एक मील पर दक्षिण तट पर शोकलपुर ग्राम है। यहाँ ही शक्कर नदी का संगम है। संगमेश्वर मन्दिर है।

जनकेश्वर तीर्थ—शोकलपुर से ४ मील दूर उत्तर तट पर अंघोरा ग्राम है। यहाँ ही जनकेश्वर तीर्थ है। कहा जाता है यहाँ राजा जनक ने यज्ञ किया था।

धर्मशिला—अंघोरा ग्राम से १६ मील पर है। ग्राम के पास जमुना घाट में नर्मदा के कुण्ड में ४० फुट से अधिक लम्बी धर्मशिला है।

दुग्धी नदी संगम—डेमावर से २ मील आगे दक्षिण तट पर दूधी नदी का संगम है। इसे बगल दरियाव भी कहते हैं।

साईं खेडा—गाडर वाड़ा स्टेशन से साईं खेड़ा कुछ मील दूर है। दूधी नदी के किनारे बसा है। गाडरवाडा से पक्की सड़क भी आती है।

केउधान घाट—दूधी संगम से लगभग १ मील उत्तर तट पर खाँड नदी का संगम है। उससे आधा मील आगे केउधान घाट है। शुद्ध नाम केतुधान घाट है।

हास्यांग बाद—होशंगाबाद का हास्यांगबाद संस्कृतीकरण है। मध्य रेलवे की बम्बई-दिल्ली लाइन पर इटारसी से १२ मील दूर हास्यांगबाद है। प्रसिद्ध नगर है। स्टेशन से आधामील दक्षिण तट पर है किनारे अनेकों मन्दिर हैं। सुन्दर घाट हैं।

तवानदी का संगम—होशंगाबाद से ६ मील पर बान्द्राभान है। उत्तर तट पर पर्वत श्रेणी में मृगनाथ का स्थान है। दक्षिण तट पर तवा नदी का संगम है।

सूर्य कुण्ड—बान्द्राभान से ६ मील दूर नर्मदा के दक्षिण तट पर सूर्य कुण्ड है।

गौघाट—सूर्य कुण्ड से सीधे मार्ग से लगभग दस मील दूर वृद्ध रेवा पर गौ घाट है। कुछ ऊपर नर्मदा की दो धारायें हो गई हैं। छोटी धारा को वृद्ध रेवा कहते हैं। गौघाट पर १२ योगिनियों तथा दो सिद्धों के स्थान हैं।

नाँदनेर—नर्मदा की मुख्य धारा के उत्तर तट पर प्राचीन मन्दिरों के खण्डहर है। **महाकालेश्वर** तथा **मनः कामेश्वर** के शिव मन्दिर हैं।

भृगु कछ आश्रम—नाँदनेर से ८ मील दूर उत्तर तट पर है। कहा जाता है महर्षि भृगु ने यहाँ गायत्री पुरश्चरण किया था। इसे भार कछ भी कहते हैं।

मारू नदी का संगम—भृगुकछ से दो मील दूर पर मारू नदी का संगम है। पांडवों की तपोभूमि है। इसलिए पांडुद्वीप कहाता है। यहाँ पामली नामक घाट है।

पलकमती नदी का संगम—पाण्डुद्वीप से १ मील पर नर्मदा के दक्षिण तट पर पलकमती नदी का संगम है। वनवास के समय पांडवों ने यहाँ यज्ञ किया था।

नारदी गंगा का संगम—पामली घाट से दो मील पर ईश्वर पुर है। मध्य रेलवे की इटारसी-इलाहाबाद लाइन पर इटारसी से ३० मील दूर सोहागपुर स्टेशन है। सोहागपुर से ईश्वरपुर तक सड़क है। ईश्वरपुर से मोतल सिर ४ मील दूर दक्षिण तट पर है। यहाँ नर्मदा में नारदी गंगा मिलती है। नारद जी की तपोभूमि तथा यज्ञभूमि है।

वरुणा नदी का संगम—मोतलसिर से ३ मील दूर नर्मदा के उत्तर तट पर वरुणा नदी का संगम है। सिंगलवाडा ग्राम तीर्थ है। वारुणेश्वर मन्दिर जीर्ण हो गया है।

आकाशदीप तीर्थ—सिंगलवाडा से २ मील पर तेदोनी नदी उत्तर तट पर नर्मदा में मिलती है। इसे ही आकाशदीप तीर्थ कहा जाता है। पाण्डवों ने यहाँ यज्ञ किया था और कार्तिक में आकाशदीप लटकाये थे।

कुब्जा संगम—तेदोनी संगम से ५ मील दूर दक्षिण तट पर माछा ग्राम है। यहाँ कुब्जा नदी का संगम है। इसे रामघाट तथा बिल्वाभ्रक तीर्थ भी कहते हैं। राजा रन्तिदेव ने यहाँ बहुत बड़ा यज्ञ किया था। कुब्जा की यह तपोभूमि कही जाती है। मन्दिर हैं।

अंजनी संगम—माछा से ५ मील दूर दक्षिण तट पर अंजनी नदी

का संगम है। संगम पर **गौरी तीर्थ** है। इसे **शाण्डिलेश्वर तीर्थ** भी कहते हैं। इन्द्र की यहाँ ब्रह्महत्या दूर हुई थी। महर्षि शाण्डिल्य ने यहाँ यज्ञ तथा तप किया था। इटारसी से ४१ मील पर पिपरिया स्टेशन है। पिपरिया से यहाँ तक पक्की सड़क है।

गोमुखा घाट—टिघरिया-होशंगाबाद से प्रवाह की ओर १७ मील है। यहाँ ही गोमुखा घाट है। गोकर्णेश्वर तथा अन्य कई मन्दिर हैं।

हत्याहरण नदी का संगम—टिघरिया से ४मील दूर दक्षिण तट पर कुलेरा या कुन्तीपुर घाट है। यहाँ ही हत्याहरण नदी का संगम है। लक्ष्मी कुण्ड है। माता कुन्ती देवी के साथ पाण्डवों ने यहाँ निवास किया था।

भीम कुण्ड—कुलेरा से एक मील दूर आंवरीघाट है। नर्मदा के मध्य में पहाड़ी टीले पर भीमकुण्ड है। पाण्डव यहाँ भी कुछ काल रहे थे। मध्य रेलवे की बम्बई-दिल्ली लाइन पर इटारसी से १६ मील पूर्व धर्मकुण्डी स्टेशन है। वहां से यहां के लिए मार्ग है। धर्मकुण्डी से यह १४ मील है।

इंदाना नदी संगम—आँवरी घाट से ३ मील दूर इंदाना नदी नर्मदा से दक्षिण तट पर मिलती है। यहाँ चतुर्मुख महादेव का मन्दिर है।

गंजाल नदी का संगम—इंदाना संगम से २० मील दूर गोंदागांव है। धर्मकुण्डी से २३ मील और इटारसी से ३६ मील पूर्व टिमरनी स्टेशन है। वहां से यह स्थान १४ मील है।पक्की सड़क है नर्मदा के दक्षिण तट पर गंजाल नदी का संगम है। गंजाल में शाहजपुरी पत्थर मिलता है जिन पर वृक्षादि के चित्र होते है। संगम पर गंजालेश्वर मन्दिर है।

गोनी नदी संगम—गोंदा गांव से १२ मील दूर नर्मदा के उत्तर तट पर गोनी नदी मिलती है। यहां जमदग्नि ऋषि ने तप किया था।

बागदी संगम—गोनी संगम से २ मील पर मेलाघाट है। मेलाघाट से १ मील पर नेमावर नगर है। उसके सामने दक्षिण तट पर हँडिया नगर है। हरदा स्टेशन से हंडिया तक १३ मील लम्बी पक्की सड़क है। कुबेर ने यहां तप किया था। जमदग्नि ऋषि ने भी यहां तप किया था। यहां नर्मदा में सूर्यकुण्ड है। जो गरमी में दीखता है। इसे नर्मदा का नाभिस्थान कहा जाता है। हंडिया नेमावर नगरों से ६ मील दूर उत्तर तटपर बागदी संगम है। यह कालभैरव की तपोभूमि है।

दाँतोनी संगम—बागदी संगम से ८ मील दूर, नर्मदा के उत्तर तट

पर दान्तोनी नदी का संगम है। हरणेश्वर, शिव तथा कालभैरव के मन्दिर हैं। कालभैरव ने यहां मृगकपधारी को वरदान दिया था, ऐसा पौराणिक आख्यान है।

पुनघाट—फतहगढ से ११ मील नर्मदा के दक्षिण तट पर खंडवा से ४४ मील पर खिरकिया स्टेशन है। वहां से पुन घाट १२ मील है। स्टेशन से यहां तक सड़क है। यहां गौतमेश्वर का प्राचीन मन्दिर है गौतम ऋषि की तपोभूमि है।

धर्मपुरी—पुनघाट के सामने उत्तर तट पर धर्मपुरी है। पास ही नर्मदा में एक छोटे टापू पर पत्थरों के दो ढेर हैं। ये भीमसेन की कांवर कहे जाते हैं। धर्मपुरी से १ मील पर **मानधारा** का नर्मदा में प्रपात है।

(यही धर्मपुरी और पुन घाट हैं जिनके विषय में असत्य, काल्पनिक कह कर अज्ञात जीवनी को कल्पित उपन्यास लिखने तक का साहस किया गया। 'हा! हन्त! हन्त! हता मनस्विता'। काल भैरव को भी पढ़िये)

कालभैरव की गुफा—धर्मपुरी से १३ मील पर जंगल मार्ग से वारंगा नाले के पास कालभैरव का स्थान है। नर्मदा तट से यह स्थान ५ मील दूर है। यहाँ पर्वत की तली में कालभैरव की गुफा है।

मान्धाता ओंकारेश्वर—पश्चिमी रेलवे की अजमेर-खण्डवा लाइन पर खंडवा से ३७ मील पहले ओंकारेश्वर रोड स्टेशन है। यह स्थान इन्दौर से ४७ मील है। यहाँ से ओंकारेश्वर ७ मील दूर है। स्टेशन से ओंकारेश्वर-मान्धाता के पास तक सड़क है। मोटर बस चलती है। बैल-गाड़ी भी मिलती है।

यहाँ दो ज्योतिर्लिङ्ग हैं ओंकारेश्वर और अमलेश्वर। ज्योतिर्लिंग १२ की गिनती में यह एक ही गिना जाता है।

नर्मदा के बीच में मान्धाता टापू पर ओंकारेश्वर लिंग है। इस द्वीप पर महाराजा मान्धाता ने ओंकार की उपासना की थी। शंकर ओंकार है ओंकार भी शंकर परमात्मा है महाराजा मान्धाता की साधना के कारण इसका नाम मान्धातातीर्थ पड़ गया। मान्धाता टापू का क्षेत्रफल लगभग १ मील है। यह एक पहाडीहै, जो एक ओर कुछ ढालू है। इसके एक ओर नर्मदा की प्रधान धारा बहती है, जैसे व्यासेश्वर (व्यासाश्रम) के दोनों ओर दो धारायें हो गई हैं। दूसरी ओर की धारा को **कावेरी** कहते हैं। द्वीप के अंत में यह कावेरी धारा नर्मदा में ही मिल जाती है। इस मान्धाता

द्वीप का आकार 'ॐकार' से मिलता है इसका चित्र-विहंगम भी ऐसा ही छपा है।

विष्णुपुरी—मोटर या बैलगाड़ी जहां यात्रियों को छोड़ती है उसे विष्णुपुरी कहते हैं। यहाँ पक्का घाट बना है। नौका से धारा पार करके मान्धाताद्वीप में पहुँचते हैं। उस ओर भी पक्का घाट है। घाट के पास कोटि तीर्थ या चक्र तीर्थ हैं। स्नान करके ऊपर ओंकारेश्वर मन्दिर में जाते हैं। मन्दिर तट पर ही ऊँचाई पर है। इसकी परिक्रमा तीन दिन में की जाती है। पहले दिन की परिक्रमा में ४० दर्शनीय स्थान तथा मन्दिर हैं। दूसरे दिन की परिक्रमा में ५० स्थानों का दर्शन किया जाता है।

ब्रह्मपुरी—तीसरे दिन की यात्रा में **ब्रह्मपुरी** की यात्रा की जाती है। विष्णुपुरी के पास गोमुख से बराबर जल गिरता रहता है। नर्मदा में यह जल जहाँ गिरता है, उसे **कपिल संगम तीर्थ** कहते हैं। यह धारा गोकर्ण और महाबलेश्वर लिंगों पर गिरती है। जल त्रिशूल भेद कुण्ड से आता है। इन्द्रेश्वर, व्यासेश्वर, अमलेश्वर के मन्दिर हैं।

अमलेश्वर—अमलेश्वर भी ज्योतिर्लिंग है। अमलेश्वर प्रदक्षिणा में वृद्धकालेश्वर, वाणेश्वर मुक्तेश्वर, और तिल भाण्डेश्वर के मन्दिर हैं। १३ देवों के और मन्दिर हैं।

मुख्य स्थान—मुख्य मन्दिर ओंकारेश्वर जी का है। द्वीप पर ही **कावेरी संगम** के पास गोरी सोमनाथ का मन्दिर है। कहते हैं यहाँ कुबेर ने तपस्या की थी।

पशुपति नाथ—कावेरी पर पशुपतिनाथ का मन्दिर है।

च्यवनाश्रम—कावेरी संगम से ४ मील पश्चिम में च्यवनाश्रम है।

सप्त मातृका तीर्थ—कुबेर भण्डारी से लगभग तीन मील नर्मदा के दक्षिण तट पर स्थित है। ओंकारेश्वर से नौका से आते हैं। **वाराही, चामुण्डा, ब्रम्हाणी, वैष्णवी, इन्द्राणी, कौमारी, और माहेश्वरी** सात माताओं के मन्दिर हैं। सात मात्रा कहते हैं।

५२ भैरवों के मन्दिर—६४ **योगिनियों** व सप्त मातृका या सात मात्रा से लगभग ७ मील दूर नर्मदा के उत्तर तट से लगभग ३ मील सीता वाटिका है। कहते हैं यहाँ वाल्मीकि ऋषि का आश्रम था। श्री जानकी जी ने वास किया था। यहाँ ६४ योगिनियों और ५२ भैरवों की विशाल मूर्त्तियाँ हैं। पास में सीताकुण्ड, रामकुण्ड और लक्ष्मणकुण्ड हैं।

सीता वाटिका से सघन जंगल के रास्ते यह स्थान ६ मील दूर है। ओंकारेश्वर रोड स्टेशन से २० मील है। और उसके पास के स्टेशन सनावद से १६ मील दूर है। मध्य रेलवे की बम्बई—दिल्ली लाइन पर खंडवा से २१ मील पर बीर स्टेशन है। वहां से १५ मील पुनासा गांव तक पक्की सड़क है। आगे ५ मील पैदल मार्ग है।

धावडी घाट—यहां नर्मदा का सबसे बड़ा प्रपात है। लगभग ५० फुट ऊंचे से जल गिरता है। यहाँ आस-पास वन हैं। प्रपात के नीचे कुण्ड है। इस कुण्ड से बाणलिंग निकलते हैं। अधिकांश लोग नर्मदेश्वर लिंग यहां से ले जाते हैं। अनेक बार बहुत सुन्दर लिंग मिलते हैं।

कोटेश्वर—ओंकारेश्वर से ४ मील दूर नर्मदा के प्रवाह की दिशा में उत्तर तट पर कोटेश्वर महादेव का मन्दिर है।

नीलगढ़ तीर्थ—ओंकारेश्वर से १ मील पर नीलगढ़ तीर्थ है। यहां करज्जेश्वर महादेव का मन्दिर है। ओंकारेश्वर से उधर का मार्ग वन पर्वत का है।

नागेश्वर कुण्ड—ओंकारेश्वर स्टेशन से नर्मदा पुल पार करने के बाद बडवाहा स्टेशन मिलता है। यह एक छोटा नगर है। यहाँ चोरल नदी के किनारे जयन्ती देवी का मन्दिर है। नगर में नागेश्वर कुण्ड है। उसके बीच में शिव मन्दिर है। नगर से नर्मदा घाट दो मील है।

भस्म टीला—बड़वाहा स्टेशन से २ मील नर्मदा घाट तक जाकर या ओंकारेश्वर रोड़ से १ मील नर्मदा का रेलवे पुल पार करके किनारे-किनारे जाने पर काड़ा ग्राम के पास यह स्थान है। कहा जाता है यहाँ भूमि से यज्ञ-भस्म निकलती थी किन्तु कई बार नर्मदा की बाढ़ का जल ऊपर बह चुका है। इससे अब यहाँ कुछ नहीं।

शुक्र ताल में एक शिव का मन्दिर आधा लगभग १२-१५ फुट रेत में दबा हुआ आज भी खड़ा है। पास में आमों का बगीचा है।

विमलेश्वर—बड़वाड़ा स्टेशन से ५ मील, और भस्म टीला वाले घाट से ३ मील दूर यह विमलेश्वर मन्दिर है। पास में टीले पर चन्द्रेश्वर महादेव का मन्दिर है।

गोमुख घाट—विमलेश्वर से ५ मील दूर नर्मदा के दक्षिण तट पर नीलगंगा कुण्ड है, जिससे गोमुख द्वारा जल गिर कर नर्मदा में आता है। वहाँ नील कण्ठेश्वर मन्दिर है।

गंगेश्वर— गोमुख से लगभग ३ मील दूर नर्मदा के मध्य में एक पक्के चबूतरे पर गंगेश्वर महादेव हैं। यहां किनारों पर तो नर्मदा पश्चिम को बहती है किन्तु चबूतरे के पास धारा पूर्व की ओर है। यहाँ **मातंग** ऋषि का आश्रम था।

खुलार संगम—गंगेश्वर से एक मील दूर नर्मदा के उत्तर तट पर खुलार नदी का संगम है। उसके पास दारकेश्वर मन्दिर है।कहते हैं कृष्ण-चन्द्र जी के सारथी दारुक ने यहाँ शिव की अराधना की थी। मन्दिर में अर्ध नारी नटेश्वर की मूर्ति है, मन्दिर के पास गुफा है।

मर्दाना—गंगेश्वर से लगभग ११ मील दूर नर्मदा के दक्षिण तट पर यह स्थान है। राजा मयूरध्वज की यहाँ राजधानी बतायी जाती है। मयूरेश्वर शिवमन्दिर है। बड़वाहा से यह स्थान लगभग २० मील है।

पिप्पलेश्वर—मर्दाना से ६मील दूर नर्मदा के उत्तर तट पर पिप्पले-श्वर मन्दिर है।

मण्डलेश्वर—पिप्पलेश्वर (पीतामली गाँव) से ११ मील दूर है। यहाँ गुप्तेश्वर महादेव और श्री रामचन्द्र जी के मन्दिर हैं। बडवाहा या खरगोल से यहाँ तक पक्की सड़क है।

माहिष्मती पुरी—महेश्वर :—पश्चिम रेलवे की अजमेर-खण्डवा लाइन पर ओंकारेश्वर रोड के पास बडवाहा स्टेशन है। बडवाहा-महेश्वर से ३५ मील दूर है। पक्की सड़क है। मोटर बसें चलती हैं।

महेश्वर मध्य भारत का प्रसिद्ध नगर है। नर्मदा के उत्तर तट पर बसा है। यहाँ अहिल्या बाई की समाधि है। प्राचीन नाम माहिष्मती पुरी है। यह कृतवीर्य के पुत्र सहस्रार्जुन की राजधानी थी। जगद्गुरु शंकरा-चार्य से शास्त्रार्थ करने वाले मण्डन मिश्र भी यहाँ ही रहते थे। नगर के पश्चिम मतंग ऋषि का आश्रम तथा मातंगेश्वर मन्दिर है। मन्दिर के समीप भर्तृहरि गुफा है। नर्मदा में द्वीप के मध्य बाणेश्वर मन्दिर है। महेश्वर की गणना पंचपुरियों में है। कहा जाता है—'महिष्मान् नामक चन्द्रवंशी नरेश ने इसे बसाया था। महिष्मान् के वंश में ही सहस्रार्जुन हुए। सहस्रार्जुन का यहां समाधि मन्दिर है। महेश्वर लिंग नर्मदा के मध्य में है, केवल गर्मियों में देखा जा सकता है। स्वाहा देवी की भी मूर्ति है। संगम पर सप्त मातृकाओं का मन्दिर है। अहिल्येश्वर आदि अनेक

मन्दिर हैं। माहिष्मती गुप्त काशी कही जाती है। काशी के समान इसका महत्व है।

महेश्वरी संगम—थोड़ी दूर पर महेश्वरी नदी का संगम है। **ज्वालेश्वर मन्दिर** है।

सहस्रधारा—महेश्वर से तीन मील आगे सहस्रधारा स्थान है। यहाँ नर्मदा चट्टानों के मध्य से बहती है। गरमी में उसकी धारा अनेक धाराओं में बंट जाती है, इससे इस स्थान का नाम सहस्रधारा है।

माण्डव गढ़—पश्चिम रेलवे की अजमेर-खंडवा लाईन पर इन्दौर-से १३ मील दूर महू स्टेशन है। महू से माण्डव गढ़ ३४ मील है। धार-नगर से २२ मील है। दोनों स्थानों तक पक्की सड़क है। महू से मोटर बस जाती है। माण्डव गढ़ पर्वत के ऊपर है। यहाँ रेवा कुण्ड है। अनेक मन्दिर हैं। आल्हा के हाथ की सांग गड़ी है।

पगारा—माण्डव गढ़ से नर्मदा प्रवाह के ऊपर की ओर १० मील पर है। नर्मदा जी की धारा यहां से ७ मील है। वक्रतुण्ड गणेश का मन्दिर है।

धर्मपुरी—पगारा से ८ मील नर्मदा के उत्तर तट पर है। यहाँ इस नाम का द्वीप भी नर्मदा में है।

कुब्जानदी—धर्मपुरी से थोड़ी दूर पर कुब्जा नदी का संगम होता है। कुब्जा कुण्ड है। बिल्वामृत तीर्थ है। कहा जाता है यहां **दधीचि ऋषि** का आश्रम था। महर्षि ने देवताओं को अपनी अस्थियाँ दी थीं।

साटक संगम—धर्मपुरी से ७ मील नर्मदा के दक्षिण तट पर खल घाट है। यह ब्रह्मा का तपः स्थल कहा जाता है। यहाँ यज्ञ कुण्ड से कपिल गौ प्रकट हुई थी। इस स्थान को कपिल तीर्थ कहते हैं। पास ही साटक नदी का संगम है। संगम के पास नर्मदा में ६० शिवलिंग हैं।

कारम और बूटी का संगम—खल घाट से तीन मील नर्मदा के उत्तर तट पर जलकोटि ग्राम है। इस ग्राम के पास नर्मदा में कारम और बूटी नाम की नदियाँ मिलती हैं। इसे त्रिवेणी तीर्थ कहते हैं।

कसरोद—धर्मपुरी से २६ मील पर कसरोद है। दक्ष प्रजापति के पुत्रों ने यहां सहस्रयज्ञ किये थे। इसे सहस्रयज्ञ तीर्थ भी कहते हैं।

बोधवाडा—गांगली से ४ मील उत्तर तट पर है। देव पथ लिंग है। देवताओं ने यहाँ से नर्मदा-परिक्रमा आरम्भ की थी।

चिखलदा—बोधवाडा से २ मील उत्तर तट पर है। सप्त ऋषियों ने यहाँ तप किया था।

राजघाट—चिखलदा के सामने नर्मदा के दक्षिण तट पर है। अनेक मन्दिर हैं। इसे बावण गंगा और रोहिणी तीर्थ भी कहते हैं।

कोटेश्वर--चिखलदा से सात मील है। नर्मदा के उत्तर तट पर बागली नदी का संगम है, संगम के पास कोटेश्वर तीर्थ है।

मेघनाद तीर्थ—२ मील है। दोनों ओर अनेक शिवलिंग हैं। उनमें से एक मेघनाद द्वारा स्थापित है। पास ही कुम्भकर्ण और रावण के तप के स्थान हैं।

गोयद नदी का संगम--दक्षिण तट पर १ मील है। इसे **मनोरथ तीर्थ** कहते हैं।

धर्मराय तीर्थ—उत्तर तट पर ५ मील है। धर्मराज ने यहाँ यज्ञ किया था। धर्मेश्वर मन्दिर है।

हिरण फाल तीर्थ—३ मील पर है। मार्ग घोर जंगल का है। नर्मदा चट्टानों के बीच बहती है। धारा संकरी है, हिरन फांद सकता है। कहा जाता है कि हिरण्याक्ष ने यहां तप किया था।

शूल पाणि--हिरण फाल से पैदल मार्ग है। अथवा चाणोद से नौका द्वारा है। बहुत प्रख्यात तीर्थ है। घोर वन में स्थित है। मेले के समय यात्री अधिक आते हैं। महा शिवरात्रि पर चैत्र शुक्ला एकादशी से अमावस्या तक यहां मेला लगता है। अन्य समय बाघ आदि का भय रहता है। दूसरा नाम **सुर पाणेश्वर** है। ठहरने के लिए धर्मशालाएं हैं। राजघाट से ही शूलपाणि का वन आरम्भ हो जाता है। देवली से २४ मील दूर दक्षिण तट पर भृगु पर्वत पर स्थित है। अन्य मन्दिरों के साथ पाण्डवों के छोटे मन्दिर हैं। शंकर ने आघात कर सरस्वती नदी प्रकट की थी जो नर्मदा में मिल गयी है। त्रिशूल आघात के स्थल पर कुण्ड है। इसे **चक्रतीर्थ** कहते हैं। दीर्घतमा ऋषि का यहाँ उद्धार हुआ, वह भी कुल सहित। काशीराज चित्रसेन ने यहां महादेव के गण का पद पाया।

भृगुतुंग पर्वत— शूलपाणि मन्दिर के दक्षिण भृगुतुंग पर्वत है। परिक्रमा करके देवगंगा होते हुए रुद्रकुण्ड मिलता है।

मार्कण्डेय गुफा— पास में मार्कण्डेय गुफा है। यहाँ मार्कण्डेय ने तप किया था।

रणछोड़ जी का मन्दिर—१ मील आगे दक्षिण तट पर रणछोड़ जी का प्राचीन मन्दिर है। मूर्ति विशाल है। मन्दिर जीर्ण है।

कपिल तीर्थ— सामने उत्तर तट पर है। यहाँ कपिल मुनि ने तप किया था। कपिलेश्वर मन्दिर है।

मोक्ष गंगा— शूलपाणि से ४ मील दक्षिण तट पर मोखड़ी है। उस के पास मोक्ष गंगा नदी का संगम है। नर्मदा में छोटा प्रपात है। चाणोद से नौका द्वारा शूलपाणि आने वालों को पौना मील चलकर यह प्रपात मिलता है। आगे चलकर नौका में बैठकर सुरपाणेश्वर जा सकते हैं। प्रपात के समीप पौन मील के भीतर नौका नहीं चल पाती।

बड़ गाँव— मोखडी के सामने कपिलतीर्थ से ४ मील उत्तर तट पर है।

पिपरिया—मोखडी से ४ मील उलूक तीर्थ। उलूक से ५ मील पिप-रिया है। पिप्पलाद ऋषि की तपोभूमि है।

मार्कण्डेय आश्रम— पिपरिया से १ मील नर्मदा के उत्तर तट पर **गमोण तीर्थ** है। यहाँ **भीम कुल्या** नदी का संगम है। मार्कण्डेय ऋषि का आश्रम यहाँ था। मार्कण्डेय स्थापित मार्कण्डेश्वर महादेव का मन्दिर है। उत्तर तट का शूलपाणि वन यहाँ समाप्त होता है।

चाणोद— पश्चिम रेलवे की जम्बूसर से उदयपुर जाने वाली लाइन के डमोई स्टेशन से चाणोद तक गाड़ी जाती है। स्टेशन से नगर लगभग आधा मील दूर नर्मदा किनारे हैं। अनेक मन्दिर और चण्डादित्य, चण्डिका देवी, चक्रतीर्थ, कपिलेश्वर, ऋणमुक्तेश्वर, पिंगलेश्वर, नन्दाहृद सप्त तीर्थ हैं, पूर्णिमा को मेला लगता है।

कर्णाली—ओर नदी को नर्मदा-संगम के पास पार करना पड़ता है। लगभग एक मील चाणोद से ऊपर की ओर है। ओर-नर्मदा संगम को लोग **पश्चिम प्रयाग** भी कहते हैं। बहुत से नवीन मन्दिर हैं। प्राचीन सोमनाथ का है। कुबेर मन्दिर को कुबेर भण्डारी कहते हैं।

सीनोद—डमोई से ४० मील पर है। कर्णाली से थोड़ी दूर है। नर्मदा के उत्तर तट पर है। शिवपुरी भी कहते हैं।

व्यासाश्रम— चाणोद से ५ मील नीचे प्रवाह की ओर है। नर्मदा

के मध्य में टापू है। पास में बरकाल कसबा है। मोटर रोड है। रेलवे स्टेशन तक मोटर चलती है। दूसरी ओर नर्मदा पर सामने शुकेश्वर तीर्थ है। यहाँ बलराम जी ने भी तप किया था। यज्ञ वट है। व्यास जी का आश्रम तथा व्यासेश्वर मन्दिर है। कहा जाता है व्यास जी ने अपने तपोबल से एक धारा आश्रम के दक्षिण बहा दी थी। यही स्थान नर्मदा का द्वीप है।

परिशिष्ट—२

आबू के स्थान

आबू—पश्चिम रेलवे की अहमदाबाद—दिल्ली लाइन पर आबू रोड प्रसिद्ध स्टेशन है। स्टेशन से आबू पर्वत १७ मील है। पक्की सड़क है। मोटर बस चलती है।

आबू शिखर १४ मील लम्बा और दो से चार मील तक चौड़ा है। कहा जाता है यह आबू या अबुर्द गिरि हिमालय का पुत्र है। 'हिमवत्सुत-मर्बुदम्" महाभारत वनपर्व तीर्थयात्रा अ० ८२ श्लोक ५५। महर्षि वसिष्ठ का यहां आश्रम था। मथुरा से द्वारका जाते हुए भगवान् कृष्ण भी यहां पधारे थे।

आबू पर्वत पर जाने के दो मार्ग हैं। एक नया, दूसरा पुराना। पुराने मार्ग में मानपुर से आगे हृषीकेश का मन्दिर मिलता है। कहते हैं यहां कृष्णचन्द्र ने रात्रि में विश्राम किया था। इस स्थान को द्वारिका द्वार कहते हैं।

चन्द्रावती नगर—द्वारका द्वार के आस-पास चन्द्रावती नगर के खण्ड-हर हैं। मन्दिर के पास दो कुण्ड हैं।

अम्बरीष आश्रम—थोड़ा आगे अम्बरीष आश्रम है। अम्बरीष ने यहां तप किया था। कुछ आगे एक चट्टान पर बहुत से मनुष्य एवं पशुओं के पद-चिन्ह हैं।

यहाँ से लौट कर फिर नवीन मार्ग से आबू पर जाना पड़ता है। चार मील आगे जाने पर पर्वत की चढ़ाई आरम्भ होती है।

मणि कर्णिका तीर्थ—मार्ग में धर्मशालाएँ हैं। वहाँ से कुछ आगे मणिकर्णिका तीर्थ है। यहाँ यात्री स्नान करते हैं। कर्णेश्वर शिवमन्दिर है। सूर्य कुण्ड भी पास ही है।

वसिष्ठ आश्रम—तीन मील और आगे जाकर लगभग ७५० सीढ़ी नीचे उतरने पर एक कुण्ड है, उसमें गोमुख से जल गिरता रहता है। यहां मन्दिर में वसिष्ठ एवं अरुन्धती जी की मूर्ति है। यहां वसिष्ठ जी ने तप किया था।

गौतम आश्रम—वसिष्ठ आश्रम के सामने ३००सीढ़ी नीचे उतरकर नाग कुण्ड है। यहाँ नाग पंचमी को मेला लगता है। महर्षि वसिष्ठ की ध्यानस्थ मूर्ति है। पास ही बछड़े के साथ कामधेनु तथा अर्बुदा देवी की मूर्त्तियाँ हैं। कहते हैं यहाँ महर्षि गौतम का आश्रम था। मन्दिर में न्याय-प्रणेता महर्षि गौतम की मूर्ति है। यहाँ तक आने का मार्ग कठिन है। थोड़े ही यात्री यहाँ आते हैं। ऋषि के लिये कुछ दुर्गम नहीं था।

पंगु तीर्थ—गोमुख से लौट कर फिर नीचे उतरना पड़ता है। आबू के सिविल स्टेशन से एक मील उत्तर पहाड़ पर देलबाड़ा में पाँच जैन मन्दिर हैं। पास ही कुंवारी कन्या का मन्दिर है। थोड़ी दूर आगे यह पंगु तीर्थ है। यहाँ एक ब्राह्मण ने तप किया था। समीप में एक बावली है।

अग्नि तीर्थ—पंगु तीर्थ से थोड़ा आगे अग्नि तीर्थ है।

यज्ञेश्वर—अग्नि तीर्थ के पास यज्ञेश्वर शिव का मन्दिर है।

पिंडारक तीर्थ—यज्ञेश्वर के समीप ही पिण्डारक तीर्थ है।

नाग तीर्थ—देलवाड़ा से चार मील पर ओरिया गाँव है। ओरिया से थोड़ी दूर जावई ग्राम में यह नागतीर्थ है। यहाँ छोटा-सा सरोवर और बाण गंगा है। नाग पंचमी को मेला लगता है।

कपिला तीर्थ—आबू बाजार के पीछे नखी तालाब है। कहते हैं इसे देवताओं ने नख से खोदा था।

राम गुफा—कपिला तीर्थ के पास ही **चम्पा गुफा, राम गुफा, राम कुण्ड** हैं। राम गुफा में ही योगिवर ऋषि दयानन्द ने तीन वर्ष रह कर योग-सिद्धियाँ प्राप्त की थीं। दक्षिण की ओर शिखर पर रामकुण्ड अवस्थित है। इसके पास ही राम गुफा है।

गोपी चन्द गुफा—ओरिया गांव से एक मील पर **अचलेश्वर** शिव मन्दिर है। **शान्तिनाथ** का जैन मन्दिर सामने है, थोड़ी दूर पर **रेवतीकुण्ड** है। वहाँ से लगभग एक मील पर **गोमती कुण्ड** है। इसे **भृगु आश्रम** कहते

हैं। यहां शंकर जी का मन्दिर है। ब्रह्मा जी की मूर्ति है। इस स्थान से लौटते समय गोपीचन्द गुफा मिलती है।

अचलगढ़—अचलेश्वर से आगे अचलगढ़ है। चारों ओर पर्वतों का कोट है। यहाँ चौमुखी जी के मन्दिर की मुख्य मूर्ति १२० मन की है। पंच धातु की बनी है।

भर्तृहरि गुफा—आगे भर्तृहरि गुफा है।

परिशिष्ट—३

जयपुर के स्थान

गलता तीर्थ—जयपुर नगर के सूर्यपोल के बाहर पूर्व की पहाड़ियों के मध्य में **गलता तीर्थ** है। पयहारी जी का मन्दिर और उनकी धूनी है। यहाँ पर नीचे कुण्ड से सदा गरम पानी बहता रहता है। राजस्थान में यह तीर्थ प्रख्यात है। मेला लगता है। गालव ऋषि ने यहाँ तपस्या की थी।

आमेर—जयपुर से ५ मील पर यह कस्बा है। जयपुर की प्राचीन राजधानी अम्बर में ही थी। यहाँ एक **गलता टीला है**। यही गालव ऋषि की तपोभूमि है। टीले के ऊपर सात कुण्ड हैं। इस टीले में से जल का झरना सदा गिरता रहता है।"—कल्याण तीर्थ अंक

अज्ञात जीवनी में इस प्रकार लिखा है—'जयपुर आकर वहाँ मैंने गलता तीर्थ गालव ऋषि की तपोभूमि·······में योगी, तपस्वी और साधकों का अनुसन्धान किया था···········।"

प्रथम कालम १० मई १९७०

"प्राचीन राजधानी और राजस्थान की प्रसिद्ध अम्बर नगरी में गलता टीला है, उसमें गालव ऋषि की तपोभूमि में एक साधु रहते हैं···।"

—वहीं

पुष्कर—पुष्कर तीर्थों के गुरु तीर्थराज माने जाते हैं। मार्ग—पश्चिमी रेलवे की अहमदाबाद-दिल्ली लाइन पर अजमेर स्टेशन है। अजमेर जहाँ दयानन्द वाटिका, ऋषि की महानिद्रा-स्थली, वैदिक यन्त्रालय, दयानन्द भवन आदि हैं। अजमेर से पुष्कर ७ मील है। ताँगे तथा मोटर बसें मिलती हैं। पक्की सड़क हैं।

पुष्कर सरोवर तीन हैं—**ज्येष्ठ, मध्य** और **कनिष्ठ ज्येष्ठ पुष्कर** पर ब्रह्मा जी का मन्दिर है। यहां ऋषिवर ठहरे थे और वेदभाष्य भी किया था। मन्दिर में ब्रह्माजी के अतिरिक्त अनेक मूर्तियाँ हैं।

सावित्री देवी का मन्दिर—पुष्कर सरोवर से एक ओर सावित्री

देवी का मन्दिर है। उसमें तेजोमयी सावित्रीदेवी की प्रतिमा है। दूसरी चोटी पर गायत्री मन्दिर है। गायत्री मन्दिर ५१ शक्तिपीठों में हैं।

नाग पर्वत—पुष्कर से लगभग १२ मील दूर प्राची सरस्वती और नन्दा नदियों का संगम है। पुष्कर के पास नाग पर्वत पर बहुत-सी गुफाएं हैं। **भर्तृहरि गुफा** दर्शनीय है। भर्तृहरि शिला भी है। ऋषि ने इधर योगियों का सन्धान किया था।

सरस्वती नदी—पुष्कर सरोवर से सरस्वती नदी निकलती है जो **साबरमती** से मिलने के बाद लूना नदी कही जाती है। पुष्कर में सरस्वती नदी के स्नान का सर्वाधिक महत्त्व है। यहाँ सरस्वती का नाम प्राची सरस्वती है। यहाँ सरस्वती के पाँच नाम हैं :—१ सुप्रभा २ काञ्चना ३ प्राची ४ नन्दा ५ विशालिका यज्ञ। पर्वत के ऊपर से निकलते जल स्रोत का उद्गम परम पवित्र है। दर्शन को पापनाशक मानने वाले मानते हैं। गोमुख से पानी गिरता है। यज्ञ पर्वत में नीचे एक स्थान पर नागतीर्थ है।

इसी लूणी नदी का नाम ही तो सरस्वती है। नन्दा ही का नाम लूणी भी होगा। इसी को या अन्य किसी धारा को साबरमती कहा गया होगा।

परिशिष्ट—४

काश्मीर के स्थान

ऋषि ने पूना-प्रवचन में काश्मीर से नेपाल तक भ्रमण का उल्लेख किया है। अतः ऋषि काश्मीर अवश्य गये थे। 'अज्ञात जीवनी' में निम्नलिखित स्थान और भूगोल ठीक है।

श्री नगर से **पहलगाँव** पहुँचे। आजकल तो मोटरें चलती हैं। काश्मीर-अमरनाथ यात्रा भी हम कर चुके हैं। पहलगाँव से अमरनाथ २७ मील है। मुख्य यात्रा श्रावण-पूर्णिमा को होती है। हम लोग भीड़ से बचने के लिए ४ दिन पहले अमरनाथ होकर लौट आये थे। पण्डे लोग पहले ही अपने-अपने यात्रियों को घेर लेते हैं। हमारे पण्डे ने भी हमें आराम से ठहराया। पहलगाँव में अच्छे होटल हैं। ठहरने की व्यवस्था उनमें या अन्य स्थानों पर भी हो जाती है। अमरनाथ के लिए घोड़े कुली यहाँ से मिल जाते हैं।

चन्दन वाडी—८ मील पर चन्दनवाडी है। मार्ग अच्छा है। यहाँ भी अच्छे होटल हैं, दूकानें हैं। लिदर नदी के किनारे-किनारे मार्ग जाता है।

शेष नाग—या शेषम् नाग कहते हैं। डाक बंगला और यात्रियों के ठहरने के लिये टीन की छत के मकान हैं। वर्षा होने पर बड़ा कष्ट होता है। तम्बू लाया जाए तो अच्छा रहता है। चन्दनवाडी-शेष नाग के मध्य में ३ मील की कड़ी चढ़ाई है। इसे पिस्सु घाटी बोलते हैं। चढ़ते-उतरते पसीना आ जाता है। हिम के मध्य से मार्ग जाता है। मूंज के जूते, जूतों पर पहन लेने से जूते फिसलते नहीं हैं। ठण्डे भी कम होते हैं। यात्री-मार्ग को छोड़ सीधे मार्ग पर चल पड़ने से मार्ग अत्यन्त कठिन और संकरा हो सकता है। तब भगवान् की याद तो अच्छी आती है। तीर्थ-यात्राओं का यही मुख्य फल है। शेष नाग पर पहाड़ों के मध्य रास्ते के साथ ही १००।१५० फुट नीचे स्वच्छ झील है। झील पर खड़े आदमी

छोटे-छोटे बालक प्रतीत होते हैं। इसमें सात मुख वाला एक ही सर्प रहता है। बृहस्पतिवार सूक्ष्मेक्षण से हमसे पहले पहुँचने वाले गुजराती छः सातयात्रियों ने बहुत ध्यान देने से देखा था। लौटती बार उनकी सूक्ष्मेक्षण-+दूरवेक्षणा का प्रयोग किया पर हमें, उन्हें भी कुछ दिखाई नहीं दिया। झील सुषमा देखने योग्य है। यात्रा से कुछ पहले ढाबा या सादा होटल खुल जाता है। ऐसे स्थानों पर भोजन महँगा मिलता ही है। पवित्र भी नहीं। मांस तो सर्वत्र पकता ही है। ऐसे होटल प्रायः सरदारों के साहस से ही चलते हैं। रात्रि यहाँ विश्राम किया।

पञ्चतरणी—८।। मील आगे पंचतरणी है। मार्ग हिमाच्छन्न है। चिन्हों से चिन्हित कर दिया जाता है। मेले के अवसर पर वर्षा होने लगी थी। बर्फ बह गई। मार्ग का पता नहीं चला। अनुमान से कठोर भूमि देख कर निकल गए। भगवान् ले ही गया। बर्फ में तो रुकना ही पड़ता। वर्षा में भी चढ़ाई पर फिसलन हो जाती है। पैर को जमाना पड़ता है। पंचतरणी में डाक बंगले में स्थान मिल गया था। और भी मैले स्थान हैं। यहाँ सामान रख अमरनाथ घोड़े पर पहुँचे थे। मार्ग में हिमाच्छन्न मार्ग कई स्थानों पर आते हैं। पाँच धारायें हैं। स्नान से पुण्य माना जाता है। अमरनाथ से लौटकर आने पर कपड़े उतार देने से भयावह ठण्ड चढ़ गई थी। केसर की गोली चाय से लेने से प्राण बचे, नहीं तो ठण्डे ही हो जाते। स्नान की बात मन से जाती रही।

अमरनाथ—पञ्चतरणी से ३।। मील है। मध्यान्होत्तर आते ही अमरनाथ चले गए थे। सायं लौट आये थे। बड़ी विशाल गुफा है। हिमस्तर पार करने के बाद समुद्र स्तर से १६,००० फुट ऊंचा स्थान है, गुफा की लम्बाई ६० फुट और चौडाई ३० फुट होगी या २५ फुट ऊंची होगी। 'प्राकृतिक हिम पीठ पर हिम निर्मित प्राकृतिक शिवलिंग हैं', यह बात निराधार है। जब टपकते स्रोत का पानी नहीं जमता तो जमी नदी से नीचे से हिम लाकर लिंग बनाते गुरुवर महाराज योगेश्वरानन्द जी ने देखा था। पूर्णिमा को तिथि अनुसार बढ़ता। कृष्णपक्ष में घटते-२ अमावस्या को नहीं रहता। यह सब किसी भक्त की भारी गप्प है। कबूतर और चिड़िया भी वहाँ अनेक देखे गए। उड़ जाते हैं फिर आकर बैठ जाते हैं। घोंसले भी होंगे। शीत में चले जाते होंगे।

परिशिष्ट—५

आसाम तथा नेपाल के स्थान

कामाख्या—यह आसाम देश में है। यहाँ आने के लिये छोटी लाईन की पूर्वोत्तर रेलवे लाईन से अमीन गांव आना होता है। आगे ब्रह्मपुत्र नदी को स्टीमर से पार करके मोटर द्वारा २॥ मील चलकर कामाख्या या कामाक्षी देवी आना होता है।

चाहे पाण्डु से रेल द्वारा गोहाटी आकर पुनः कामाक्षी देवी आ जायें। कामाक्षी देवी का मन्दिर पहाड़ी पर है। जो अनुमान से एक मील ऊंची होगी। इस पहाड़ी को नीलपर्वत भी कहते हैं। इस देश को काम-रूप असम या आसाम कहते हैं। इस देश में कई पीठ हैं।

इस मन्दिर को कूच बिहार के राजा विश्व सिंह और शिव सिंह ने बनवाया था। प्रथम मन्दिर १५६४ में काला पहाड़ ने तोड़ डाला था। इस को पहले आनन्द आख्या कहते थे। समीप ही छोटा-सा सरोवर है। आश्विन तथा चैत्र के नवरात्र में बड़ा मेला भरता है।

'५१ सिद्ध पीठों में कामरूप को सर्वोत्तम कहा है।

(महाभारत—१२।३०)

"परमेश्वर की पूजा, जप, हवन आदि करके यथेच्छ फल की प्राप्ति साधकों को सुलभ है।" (महाभारत—१२।३७)

उमानन्द शिव मन्दिर—पहाड़ी से उतरने पर ब्रह्मपुत्र नदी के मध्य में उमानन्द टापू में शिवमन्दिर है।

नवद्वीप धाम—पूर्वो रेलवे की हावड़ा-बरहरवा लाईन पर हावड़ा से ६६ मील दूर 'नवद्वीप धाम' स्टेशन है। नगर लगभग १ मील दूर है। श्री चैतन्य महाप्रभु की जन्मभूमि है। भजनाश्रम में ठहरने की सुविधा है। निश्चित दक्षिणा देने पर दर्शन कराया जाता है। दर्शनार्थ गौराङ्ग महाप्रभु की मिट्टी की अनेक लीलाओं की मूर्तियाँ हैं। पूजा नहीं होती। अनेक मन्दिर हैं।

शान्ति पुर—नव द्वीप से १२ मील पर शान्ति पुर है। गौडीय वैष्णवों का यहां श्री पीठ है। कार्तिक पूर्णिमा को मेला भरता है।

महाकालेश्वर—लिंगराज के अनेक मन्दिरों में एक है।

पुरी—पूर्वी रेलवे की हावड़ा वाल्टेयर लाईन पर कटक से २९ मील दूर खुरदा रोड स्टेशन है। वहाँ से पुरी तक लाइन जाती है। खुरदा से २८ मील है। कटक, भुवनेश्वर, खुरदा रोड आदि से मोटरें जाती हैं। अनेक ठहरने के स्थान हैं।

यहाँ स्नानार्थ ८ पवित्र तीर्थ हैं।

गंगा सागर—कलकत्ता से यात्री प्रायः जहाज में गंगा सागर जाते हैं। कलकत्ते से ३८ मील दक्षिण 'डायमण्ड हार्बर' स्टेशन है। वहाँ से नावें और जहाज भी गंगा सागर जाते हैं, सागर द्वीप ९० मील दक्षिण है।

थोड़े से साधु यहाँ रहते हैं। यह द्वीप १५० वर्गमील के लगभग है। वन्य प्रदेश है। प्रायः जनहीन है। समुद्र गंगा के संगम से कई मील उत्तर में वामन खल स्थान में एक प्राचीन मन्दिर है। एक जीर्ण मन्दिर भी है। चन्दन पीडि वन में विशालाक्षी का मन्दिर है। मेले के स्थान पर पहले गंगा यहीं सागर में मिलती थी। अब गंगा मुहाना पीछे हट गया है, सागर द्वीप के पास गंगा की एक छोटी धारा समुद्र से मिलती है। मकर संक्रान्ति पर पांच दिन मेला रहता है। तीन दिन स्नान होता है। कभी कपिल मुनि का मन्दिर था, अब कोई नहीं। कलकत्ते में मूर्ति रखी रहती है। मेले पर ले जाई जाती है। यहां पिण्ड दान, श्राद्ध भी होता है। समुद्र स्नान भी। कार्तिक पूर्णिमा पर भी लोग जाते हैं। भोजन अपने आप बनाना होता है, न बाजार, न दुकानें। भोजन का सामान साथ ले जाना होता है।

परशुराम कुण्ड—आसाम में हिमालय की पूर्वोत्तर सीमा पर पर्वत के पाद देश में परशुराम कुण्ड स्थित है। कहते हैं जब परशुराम ने मातृ-हत्या के मोक्षण के लिए अपने पिता जमदग्नि ऋषि से उपाय पूछा, कहा—ब्रह्म कुण्ड में जाकर स्नान करो—वहाँ परशुराम का पाप नष्ट हो गया। विश्व कल्याण के लिए पर्वत को फरसे से काटकर ब्रह्मकुण्ड का जल बाहर ले आये। वही ब्रह्म-पुत्र कहलाया। ब्रह्मपुत्र आता तो हिमालय के तिब्बती क्षेत्र से है जहाँ यह आसाम में प्रवेश करता है, वहीं परशु-राम कुण्ड था। पर्वतों में भूकम्प आने से धारा बदल गई। कुण्ड लुप्त हो गया। वहाँ की यात्रा बन्द हो गई। पहाड़ से उतर ब्रह्मपुत्र ने जिस स्थल पर पृथिवी का स्पर्श किया, उसी स्थान का नाम परशुराम-कुण्ड है।

पशुपति नाथ—काठमाण्डू (नेपाल) में है। पक्की सड़क है। लारियाँ-टैक्सियाँ मिलती हैं। दो मील पर पशुपति नाथ का मन्दिर है। काठमाण्डू नगर विष्णुमती और बागमती नदियों के संगम पर बसा है। तट पर मछन्दर नाथ का मन्दिर है। पशुपति नाथ की मूर्ति पारस की है, यह भ्रम है। पंचमुख शिवलिंग है।

मुक्तिनाथ—मुक्तिनाथ काठमाण्डू से १४० मील है। हवाई जहाज से आ सकते हैं। यहाँ आने के लिए गोरखपुर से भी मार्ग आता है। मुक्तिनाथ शालग्राम पर्वत का क्षेत्र है। अनेक रूप के शालग्राम मिलते हैं। मुक्तिनाथ के अन्दर गरम पानी के सात झरने हैं। अग्निकुण्ड के पास अग्नि-ज्वालायें दृष्टि में पड़ती है।

परिशिष्ट—६

दक्षिण के स्थान

पुरी—पूर्वी रेलवे की हावड़ा वाल्टेयर लाइन पर कटक से २६ मील दूर खुरदा-रोड स्टेशन है। वहां से पुरी तक एक लाइन जाती है। खुरदा-रोड वहां से २८ मील है। आसनसोल, हावड़ा, मद्रास तथा तलचर से पुरी के लिए सीधी ट्रेनें जाती हैं। कटक, भुवनेश्वर, खुरदा रोड से मोटरें भी जाती हैं। ठहरने के लिए अनेक धर्मशालायें एवं मठ हैं। पुरी में आठ पवित्र जलतीर्थ हैं।

जगन्नाथ मन्दिर—पुरी स्टेशन से मन्दिर एक मील है। मन्दिर से सीधा मार्ग समुद्र तट गया है। स्नान का स्थान स्वर्गद्वार कहाता है। मन्दिर बहुत विशाल है। मन्दिर दो परकोटों में है। चारों ओर चार महाद्वार हैं। सबसे ऊंचा विमान या श्रीमन्दिर है। इसी में मूर्ति स्थित है। सामने जगमोहन है। पीछे मुखशाला नाम का मन्दिर है। आगे भोग-मण्डप है। पूर्व में सिंह द्वार, दक्षिण में अश्व द्वार, पश्चिम में व्याघ्र द्वार, उत्तर में हस्तिद्वार है। दर्शन सब ही के लिये सुलभ है।

आगे एक छोटे मन्दिर में विश्वनाथ लिंग है। २५ सीढ़ी चढ़कर दूसरे प्राकार में जाया जाता है। दोनों ओर प्रसाद के बाजार हैं। अनेक मन्दिर हैं। द्वार के सामने मुक्तिमण्डप है। इसे 'ब्रह्मा आसन' कहते हैं। पूर्वकाल में यज्ञ में ब्रह्मा जी ब्रह्मा बनकर विराजमान होते थे। मुक्ति मण्डप में आज भी स्थानीय विद्वान् ब्राह्मण यज्ञ करते-कराते हैं।

सरस्वती मन्दिर,
लक्ष्मी मन्दिर,
सूर्य मन्दिर,
पातालेश्वर महादेव मन्दिर
वैकुण्ठ द्वार के पास वैकुण्ठेश्वर महादेव का मन्दिर है।
कलेवर बदलने पर पुराने जगन्नाथ जी को यहाँ समाधि दी जाती है।

धनुष्कोटि— अनेक मन्दिर, अनेक कथाएं हैं। मद्रास से धनुष्कोटि तक सीधी लाइन है। रामेश्वर से 'रामेश्वरम् रोड' स्टेशन लगभग ३ मील है। रेल जाती है। मीठे जल का अभाव है। समुद्र किनारे छाया नहीं। धर्मशाला स्टेशन के पास है। मछलियों को बू आती है। यहाँ ठहरते नहीं, रामेश्वर चले जाते हैं। श्री लंका के लिये जहाज जाता है। रेल के डब्बे जहाज पर चढ़ा दिये जाते हैं। चार घण्टे में लंका पहुँच जाते हैं। समुद्र के मध्य में धनुष्कोटि द्वीप का अन्तिम छोर है। बंगाल की खाड़ी और महोदधि का यहां संगम है। श्राद्ध भी होता है। स्वर्ण के धनुष का दान भी किया जाता है। एक ही दिन में ३६ स्नान करने की यहाँ विधि है। तट से आध मील पर राममन्दिर है। श्री राम, लक्ष्मण, जानकी की मूर्तियाँ हैं। हनुमान आदि की अनेक मूर्तियाँ हैं।

त्रिचना पल्ली— दक्षिण की लाइनों का केन्द्र है। म्युनिसिपल चोल्ट्री में किराया देकर ठहर सकते हैं। खेमराज श्री कृष्ण दास की धर्मशाला भी गणेश मन्दिर के पास है। २३५ फुट ऊंची नन्दी की आकृति की विशाल चट्टान नगर के मध्य है। नीचे से ऊपर तक एक ओर मन्दिर बने हैं। इसे कैलास का खण्ड बताया जाता है। दक्षिण कैलास कहता है।

मदुरा—त्रिचनापल्ली तूतीकोरिन लाइन पर त्रिचना पल्ली से ९६ मील दूर मदुरा (मधूरै) नगर है यहां भी और कांचीमें भी भारतीय शिल्प कला का अद्भुत कौशलदिखाई पड़ता है। पत्थर कोट कर ऐसी शृंखला बनाई है जिसकी कड़ियां घूम सकती हैं। चान्दी से मढ़ी नन्दी की विशाल मूर्ति है। २०८सीढ़ियां चढ़ने पर गणेश जी का मन्दिर है। सीढ़ियाँ चट्टान में काटी गई हैं। ऊपर गणेश जी की भव्य मूर्ति है।

रामेश्वरम् — मद्रास से धनुष्कोटि तक दक्षिण रेलवे की सीधी लाइन है। इस लाइन पर पाम्बन् स्टेशन से एक लाइन रामेश्वरम् तक जाती है। कुछ डिब्बे सीधे जाते हैं। मदुरा से आने वाले 'माना मदुरै' में गाड़ी बदलें। मद्रास धनुष्कोटि लाइन लें। पण्डों के सेवक यात्रियों को घेर लेते हैं। उनके ठहरने की पर्याप्त सुविधा है। धर्मशालायें भी पर्याप्त हैं। यहाँ हिन्दी समझी जाती है।

रामेश्वर दक्षिण दिशा का धाम है। समुद्री द्वीप में स्थित है। समुद्र के संकीर्ण भाग पर पाम्बन स्टेशन के पास पुल है। जहाजों के आने-जाने पर उठा दिया जाता है। रामेश्वर द्वीप ११ मील लम्बा और ७ मील चौड़ा है। राम ने इस की स्थापना की, ऐसी बहुतों की मान्यता है। यहाँ

ठहर कर पुल बनवाया था। चौड़ाई देवी पत्तन से दर्भशयन तक थी। सेतुमूल कहलाता है। नाना तीर्थ हैं। राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान्, सुग्रीव, बिभीषण, जाम्ववान् अंगद आदि की मूर्तियाँ हैं। राजा सेतुपति के परिवार के लोगों की मूर्तियां भी एक स्तम्भ में बनी है। सामने स्वर्ण-मण्डित स्तम्भ है। अनेक तीर्थ हैं। आंगन विस्तृत है। मन्दिर के सामने सभा मण्डप है।

एक बहुत सुन्दर स्फटिक-लिंग है। प्रातः ४॥ से ५ तक दर्शन होते हैं। मन्दिरों, तीर्थों की पूजा-स्नान विधि बड़ी विस्तृत है।

लंका— धनुष्कोटि स्टेशन से रेल के दो डिब्बे जहाज पर चढ़ा दिये जाते हैं। जहाज **तैल मनार** (बन्दरगाह) पर पहुँचता है। डिब्बे वहाँ गाड़ी में जोड़ दिये जाते हैं। पाम्बन स्टेशन पर जाने का अनुमति-पत्र लेना होता है यह लंका रामायण वाली नहीं, यद्यपि अशोक वाटिका आदि सब बना लिये गये हैं। सिंहल, लंका दो हैं। गाड़ी में **कोलम्बो** जाते हैं। वहाँ श्री राम मन्दिर है। हिन्दू यात्री ठहर सकते हैं।

कैण्डी— कोलम्बो से यहाँ तक गाड़ी जाती है। कैण्डी में भगवान् बुद्ध का प्रसिद्ध मन्दिर है।

कन्या कुमारी— छोटे नारायण से कन्या कुमारी लगभग ५२ मील है। कन्याकुमारी एक अन्तरीप है। भारत की अन्तिम दक्षिण सीमा है। एक ओर बंगाल की खाड़ी, दूसरी ओर अरब सागर है। सामने हिन्द महा सागर है। यहाँ सरकारी धर्मशाला है। तीन दिन रह सकते हैं। भोजन बनाने के बरतन भी मिलते हैं। तीनों समुद्रों का संगम पवित्र तीर्थ है। स्नान के लिये समुद्र में सुरक्षित घेरा बना है। महिलाओं के वस्त्र परिवर्तनार्थ एक ओर कमरे भी बने हैं। चैत्र पूर्णिमा का समुद्र का दृश्य अद्भुत होता है। दूसरे दिन बंगाल की खाड़ी में अपूर्व दृश्य होता है।

समुद्र में सावित्री, गायत्री, सरस्वती, कन्या विनायक आदि तीर्थ है।

परिशिष्ट—७

योगी ने जहाँ जहाँ यात्रा की उन स्थानों की ऊंचाई

	ऊँचाई	दूरी	
हरिद्वार	६२४ फुट	०	हरिद्वार से
ऋषिकेश	१११६ "	१५	"
टिहरी	२२७८ "	४१	"
श्रीनगर	१७०७ "	६६	"
अमरनाथ	११००० "		श्रीनगर से
लेह	१२००० लगभग		"
रुद्रप्रयाग	२०००	८८ मील	ऋषिकेश से
अगस्त्यमुनि	३०००	१०० "	"
गुप्त काशी	४८५०	११२ "	"
केदारनाथ	११७५३	११९ "	"
ऊखीमठ	४३००	२६ "	केदार से
तुंगनाथ	१२०७२	४१ "	"
बद्रीनाथ	१०२४४	८७ मील	केदार से
माणा	१०५६०	९० "	"
वसुधारा	१५१२०	९३ "	"
४०० फीट ऊँचाई से गिरती है।			
सतोपथ	१४०००	१०९ "	"
अलकापुरी	१५०००	१२३ "	"
नीतीघाटी	११५००	४३ "	जोशी मठ से
कैलाश	२२०२०	×	
मानसरोवर	१४९००	×	
राक्षसताल	"	×	

इतनी ऊँचाई पर योगीराज दयानन्द योग सामर्थ्य से केवल एक कटिवस्त्र में घूमते रहे !!! नंगे पैर !!! अनुमान होता है १५००० और २०००० फुट की ऊँचाई पर पैदल यात्रा की है। ६० मील तक की यात्रा एक दिन में बर्फीले पहाड़ों की है।

परिशिष्ट—७

योगी ने जहाँ जहाँ यात्रा की उन स्थानों की ऊंचाई

	ऊँचाई	दूरी	
हरिद्वार	६२४ फुट	०	हरिद्वार से
ऋषिकेश	१११६ "	१५	"
टिहरी	२२७८ "	४१	"
श्रीनगर	१७०७ "	६६	"
अमरनाथ	११००० "		श्रीनगर से
लेह	१२००० लगभग		"
रुद्रप्रयाग	२०००	८८ मील	ऋषिकेश से
अगस्त्यमुनि	३०००	१०० "	"
गुप्त काशी	४८५०	११२ "	"
केदारनाथ	११७५३	११६ "	"
ऊखीमठ	४३००	२६ "	केदार से
तुंगनाथ	१२०७२	४१ "	"
बद्रीनाथ	१०२४४	८७ मील	केदार से
माणा	१०५६०	६० "	"
वसुधारा	१५११२०	६३ "	"
४०० फीट ऊँचाई से गिरती है।			
सतोपथ	१४०००	१०६ "	"
अलकापुरी	१५०००	१२३ "	"
नीतीघाटी	११५००	४३ "	जोशी मठ से
कैलाश	२२०२०	×	
मानसरोवर	१४६००	×	
राक्षसताल	"	×	

इतनी ऊँचाई पर योगीराज दयानन्द योग सामर्थ्य से केवल एक कटिवस्त्र में घूमते रहे !!! नंगे पैर !!! अनुमान होता है १५००० और २०००० फुट की ऊँचाई पर पैदल यात्रा की है। ६० मील तक की यात्रा एक दिन में बर्फीले पहाड़ों की है।
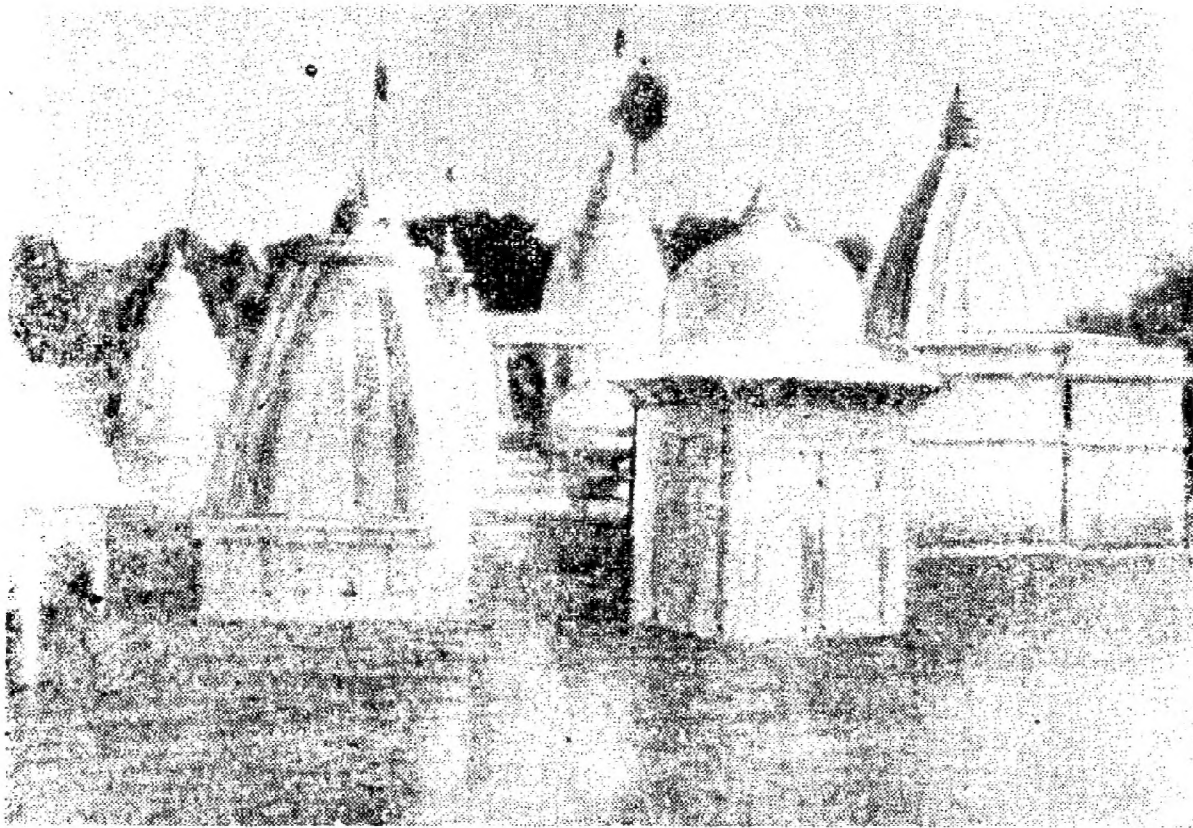
अमरकण्टक : नर्मदा के उद्गम पर कोटि तीर्थ (पृष्ठ ४४)
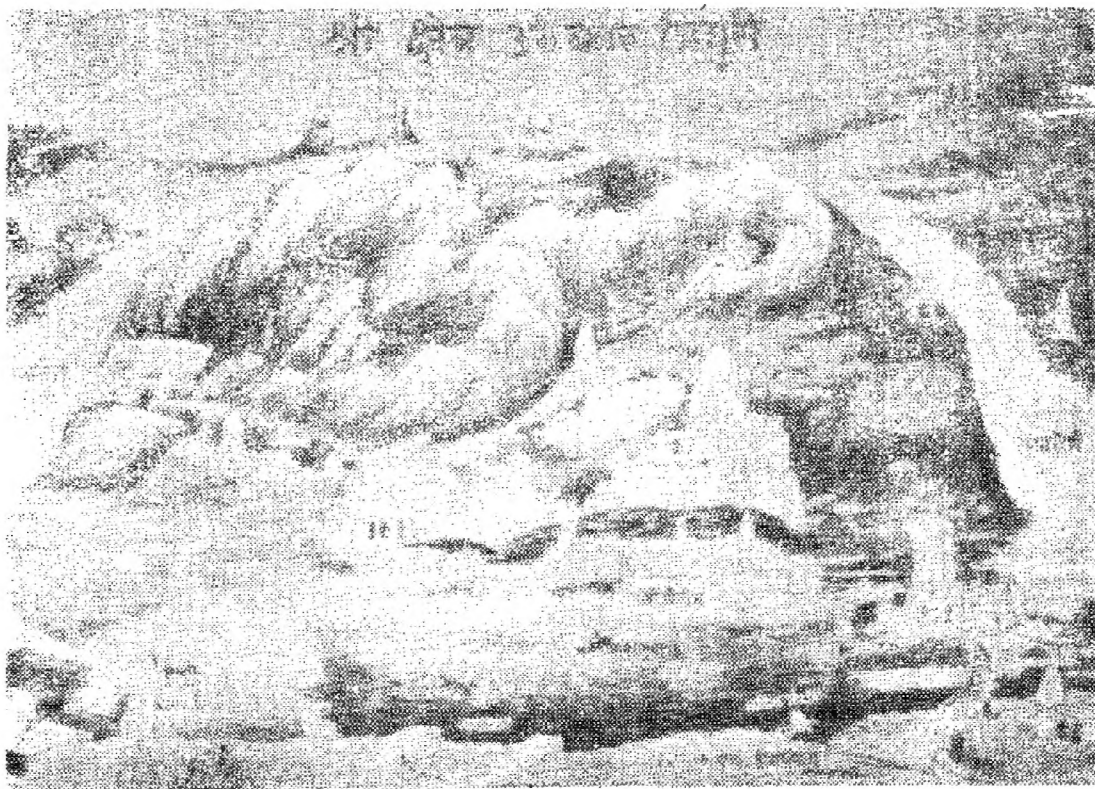
श्री ओंकारेश्वर

बाईं ओर कावेरी तथा दक्षिण की ओर नर्बदा के मध्य स्थित है। (पृष्ठ ४५)

अनुसंधान निष्कर्ष

१. इस आत्मचरित्र का उल्लेख बहुत है।

२. आत्मचारित्र अब तक क्यों नहीं मिला ?

अंग्रेजी सरकार की कड़ी निगरानी, सन् ५७ के क्राँतकारियों से सम्बन्ध, अंग्रेजी इतिहास की साक्षी मिलने में बाधक रहो।

३. थियोसोफिस्ट-आत्मचरित्र से प्रामाणिकता की पुष्टि—

ऐतिहासिक तथा भौगोलिक स्थति के आधार पर, आज तक की ऋषि-जीवनियों में तथा अज्ञात जीवनी के मग्नम्,त्रियुगीनारायण,तुंगनाथ, केदारघाट, मानसोद्भेदतीर्थ, अलकापुरी, रामपुर आदि के यात्रा-स्थलों का समान उल्लेख है।

४.ब्रह्म समाज और आर्यसमाज का संघर्ष भी ऋषि की अज्ञात जीवनी के प्रकाशन में बाधक रहा—

५. श्री पं० दीन बन्धु जी शास्त्री का अध्यवसाय अपूर्व है।

६. आत्मचरित्र की खोज पर वधाई।

७. ऋषि ने स्वातन्त्र्य-संग्राम में पूरा भाग लिया।

सात्यार्थ प्रकाश की साक्षी, से बाघेर जाति की वीरता का वर्णन, अंग्रेजों की दुर्दशा, बिठूर के मन्दिरों का नाश, थियोसोफिस्ट आत्मचरित्र के अनुसार क्रान्ति की तिथियों और स्थानों और भाग लेने का पूर्णतः समर्थन है।

८. नाना साहब महर्षि के सच्चे शिष्य थे—नाना साहब की समाधि का मौरवी में होना ही प्रमाणित करता है।

९. कुम्भ के मेले पर ऋषि के दर्शन करने वाले वोर-पुंगव थे—

नाना साहब, महारानी लक्ष्मीबाई, अजीमुल्ला खाँ, बाला साहब तांत्याटोपे, वीरवर कुँवर सिंह मंगल पांडे गंगाबाई।

१०. आत्मचरित्र की ऐतिहासिकता—

ऋषि बड़ौदा से बनारस गए, थियोसोफिस्ट आत्मचरित्र से तथा अन्य उपलब्ध जीवनियों में भी ऐसा ही सिद्ध होता है।

११. हिमालय के समस्त पर्वतीय स्थलों का भ्रमण—अर्थात्

ऋषिकेश से श्रीनगर,—ले—ऋषिकेश—मानसरोवर, काश्मीर यात्रा कैलाश यात्रा—तिब्बत की जोखिम भरी यात्रा ऋषि ने की।

१२. सन् ५७ के रक्त कमल और चपाती का ऐतिहासिक रोचक वर्णन है।

१३. ह० ईसा का भारत में योगाभ्यास ऐतिहासिक है।

१४. कामाख्या में ५०० ब्राह्मणों बालकों का बलिदान हुआ था।

।। ओ३म् ।।

प्रशस्तियाँ

आशंसा

महामना श्री १०८ ब्रह्मानन्दजी आर्य, त्रैतवेदान्ताचार्य (वाराणसी)

ओंकार आश्रम,
मु० चान्दोद (चाणोद कर्णाली),
बड़ोदा।
ता० २।१०।७१ ई०

सनातन-वेद-धर्मनिष्ठ, योगीराज, विद्वद्वर्य. आर्यशिरोमणि, तपोनिष्ठ परमप्रेमास्पद श्रीमान् स्वामी श्री सच्चिदानन्द जी महाराज सरस्वती !

मुकाम चान्दोद, ओंकार आश्रम से स्वामी ब्रह्मानन्द आर्य त्रैत वेदान्ताचार्य का सादर सप्रेम्णा ओं नमो नमस्ते स्वीकृत होवे।

ईश्वर कृपा से आप वहाँ सकुशल होंगे। आपकी प्रेरणा से भेजा हुए छपे—योगीराज दयानन्द जी का आत्मचरित्र—३६ वर्ष की अज्ञात जीवनी, के सूचना पत्र नगर पोस्ट मार्फत भेजे, सो मुझे मिल गए हैं। इस सूचना पत्र को पढ़कर मुझे बहुत आश्चर्यमय आनन्द हुआ है।

आपके इस परम उग्र तपोमय पवित्रतम पुरुषार्थ के लिए बहुत बहुत साधुवाद सहित धन्यवाद है। आप वी. पी. द्वारा पूज्य गुरुदेव दयानन्द जी महाराज का आत्मचरित्र जो ३६ वर्ष का अज्ञात जीवन है और सूची में छपे योग विषयक सभी पुस्तकें भिजवाने की कृपा कीजियेगा।......।

आपके सूचना पत्र जो नग ८ यहाँ भेजे हैं मैं उन्हें इधर के आर्य पुरुषों और समाज के मन्त्रियों को दूंगा। आपकी उक्त पुस्तकों की सिफारिश नगरों में यत्र-तत्र करता रहूंगा सो जानना जी।

ऊँ आश्रम स्वामी ब्रह्मानन्द आर्य